

पोषण संवेदी कृषि का सार्वजनिक स्वास्थ्य में कृषि विस्तार सेवाओं की भूमिका एवं उनका योगदान

अभिजीत कुडेरिया¹, चेतना पाठक², डॉ. सोनम अग्रवाल³

परिचय:

कृषि और पोषण के बीच गहरा संबंध है। खेती का मुख्य उद्देश्य खाद्य का उत्पादन करना है, लेकिन यह केवल पेट भरने तक सीमित नहीं होना चाहिए। यह एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए जरूरी है कि खेती से प्राप्त खाद्य पदार्थ न केवल मात्रात्मक दृष्टि से बल्कि गुणात्मक दृष्टि से भी समृद्ध होना चाहिए। पोषण संवेदी कृषि (Nutrition Sensitive Agriculture) एक ऐसा दृष्टिकोण है, जिसमें कृषि उत्पादन को इस प्रकार आकार दिया जाना चाहिए कि वह लोगों की पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा कर सके। इस प्रक्रिया में कृषि विस्तार सेवाओं की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण और अहम होती है, जो किसानों को सही जानकारी, तकनीक और संसाधनों के माध्यम से स्वास्थ्य और संतुलित उत्पादन के लिए प्रेरित करती है।

पोषण संवेदी कृषि क्या है?

पोषण संवेदी कृषि का मतलब है कि खेती की प्रक्रियाओं को इस प्रकार अनुकूलित किया जाए कि वे पोषण सुरक्षा को बढ़ावा दें। इसका उद्देश्य सिर्फ उत्पादन बढ़ाना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि उत्पादित खाद्य पदार्थ विटामिन, खनिज और अन्य पोषक तत्वों से भरपूर हों।

इसके प्रमुख लक्ष्य:

पोषण से भरपूर फसलें: खेती में उन फसलों को प्राथमिकता देना, जिनमें विटामिन, प्रोटीन और

खनिज जैसे पोषक तत्व अधिक हों, जैसे हरी पत्तेदार सब्जियाँ, दालें, और फल आदि।

पोषण विविधता: कृषि में विविधता लाकर विभिन्न प्रकार की फसलों, दलों तथा फलों का उत्पादन करना चाहिए ताकि लोगों को सभी आवश्यक पोषक तत्व मिल सकें।

जैविक खाद्य उत्पादन: रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग को कम करके जैविक खाद्य का उपयोग कर उत्पादन को बढ़ावा देना, और हानिकारक कीटनाशक तथा रसायन से मुक्त करना जिससे उत्पाद स्वास्थ्यवर्धक प्राप्त हो सकें।

मिट्टी और जल प्रबंधन: मिट्टी तथा जल संसाधनों का सही प्रबंधन करना जिससे फसलों की गुणवत्ता में सुधार हो सके।

कृषि विस्तार सेवाओं की भूमिका

कृषि विस्तार सेवाएँ किसानों और वैज्ञानिकों के बीच एक सेतु का काम करती हैं। ये सेवाएँ नई कृषि तकनीकों, प्रथाओं और जानकारी को किसानों तक पहुँचाने का काम करती हैं, जिससे खेती की गुणवत्ता और उत्पादकता में सुधार हो सके। पोषण संवेदी कृषि में भी कृषि विस्तार सेवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वे किसानों को पोषण संबंधी जागरूकता प्रदान करते हैं और उन्हें इस बात के लिए प्रेरित करते हैं कि वे अपने कृषि उत्पादन को पोषण-संवर्धित बनाने के लिए

अभिजीत कुडेरिया¹, चेतना पाठक², डॉ. सोनम अग्रवाल³

^{1&2} पीएच.डी. शोधार्थी, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर – 482004 - (म.प्र.)

³सहायक प्राध्यापक, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर - 482004 - (म.प्र.)

क्या कर सकते हैं।

विस्तार सेवाओं के प्रमुख योगदान:

किसानों को पोषण संबंधी जानकारी देना: कृषि विस्तार सेवाएँ किसानों को यह सिखाती हैं कि कौन सी फसलें पोषण से भरपूर होती हैं और उन्हें कैसे उगाया जा सकता है। यह जानकारी उन्हें स्वस्थ खाद्य उत्पादन के लिए प्रेरित करती है।

उन्नत बीज और तकनीक प्रदान करना: पोषण संवेदी कृषि के लिए आवश्यक है कि किसानों को उन्नत बीज और तकनीक प्रदान कराई जाए। कृषि विस्तार सेवाएँ इन बीजों और तकनीकों के बारे में जानकारी देकर किसानों की मदद करती हैं।

खाद्य विविधता को बढ़ावा देना: किसानों को विभिन्न प्रकार की फसलें उगाने के लिए प्रेरित करना, ताकि उनकी फसलों में पोषण विविधता हो और स्थानीय समुदायों को पौष्टिक आहार मिल सके।

जैविक खेती को प्रोत्साहन: जैविक खेती की तकनीकों को बढ़ावा देकर कृषि विस्तार सेवाएँ किसानों को रसायनों के कम उपयोग के लिए प्रेरित करती हैं। जैविक उत्पादन न केवल पर्यावरण के लिए अच्छा है,

बल्कि इससे प्राप्त होने वाले खाद्य पदार्थ पोषण से भरपूर और सुरक्षित होते हैं।

सार्वजनिक स्वास्थ्य में पोषण संवेदी कृषि का योगदान

पोषण संवेदी कृषि का अंतिम लक्ष्य है सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाना। एक स्वस्थ समाज तभी विकसित हो सकता है, जब सभी वर्गों को पर्याप्त और पोषक तत्वों से युक्त आहार मिल सके। यह आहार विभिन्न पोषक तत्वों से भरपूर हो, जो शारीरिक तथा मानसिक विकास के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

सार्वजनिक स्वास्थ्य में योगदान के कुछ प्रमुख पहलू:

कुपोषण की समस्या का समाधान: भारत में कुपोषण एक गंभीर समस्या है। पोषण संवेदी कृषि के माध्यम से किसानों को पोषण से भरपूर फसलें उगाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है, जिससे कुपोषण को कम करने में मदद मिल रही है। उदाहरण के लिए, आयरन और जिंक से भरपूर अनाज और सब्जियाँ कुपोषण की रोकथाम में सहायक हो सकती हैं।



स्थानीय खाद्य प्रणाली का सुधार: पोषण संवेदी कृषि स्थानीय खाद्य प्रणालियों को बेहतर बनाती है। जब किसान स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार पोषक तत्वों से युक्त फसलें उगाते हैं, और स्थानीय समुदायों को स्वस्थ आहार प्राप्त होता है, तथा उनका स्वास्थ्य बेहतर होता है।

मातृ और शिशु स्वास्थ्य में सुधार: पोषण से भरपूर आहार विशेष रूप से गर्भवती महिलाओं और शिशुओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। पोषण संवेदी कृषि से प्राप्त खाद्य पदार्थों से इनकी पोषण आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है, जिससे मातृ और शिशु मृत्यु दर में कमी आएगी।

बीमारियों की रोकथाम: संतुलित और पोषण से भरपूर आहार से कई बीमारियों, जैसे मधुमेह, हृदय रोग, और मोटापा, की रोकथाम की जा सकती है। पोषण संवेदी कृषि स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देती है, जिससे लोग इन बीमारियों से बच सकते हैं।

सरकार और संगठनों की भूमिका

सरकार और विभिन्न संगठनों ने पोषण संवेदी कृषि को बढ़ावा देने के लिए कई नीतियाँ और कार्यक्रम शुरू किए हैं:

राष्ट्रीय पोषण मिशन: यह मिशन पोषण संवेदी कृषि के जरिए लोगों को पौष्टिक आहार उपलब्ध कराने की दिशा में काम कर रहा है।

कृषि पोषण जागरूकता कार्यक्रम: कृषि विस्तार सेवाओं के तहत किसानों को पोषण संबंधी जानकारी प्रदान करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

स्वस्थ भारत अभियान: इस अभियान के तहत लोगों को संतुलित और पौष्टिक आहार के महत्व के बारे में जागरूक किया जा रहा है।

निष्कर्ष

पोषण संवेदी कृषि और कृषि विस्तार सेवाएँ मिलकर एक स्वस्थ समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। किसानों को पोषण के प्रति जागरूक करके और उन्हें पोषण से भरपूर फसलें उगाने के लिए प्रोत्साहित करके न केवल उनकी आजीविका में सुधार किया जा सकता है, बल्कि समाज में कुपोषण और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं को भी कम किया जा सकता है। कृषि और सार्वजनिक स्वास्थ्य के इस संबंध को मजबूत बनाना ही एक समृद्ध और स्वस्थ भारत की दिशा में कदम है।

